B.S.N.V. P.G. College, Charbagh Lucknow

Department of History (MIH)

(B.A. III Semester) Paper II (History of Europe)

Syllabus

HISTORY OF EUROPE (1789-1848)

Lecture on Causes of French Revolution1789 **Dr. Nilima Gupta**

अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम –

फ्रांस इंग्लैड से औपनिवेशिक वर्चस्व के लिए हुए सप्तवर्षी य (1756-1763) युद्ध में हुई हार का बदला अमेरकीय स्वतंत्रता संग्राम में सहायता देकर लेना चाहता था । इसी लिए उसने अमेरिकी प्रधान सेनापति जार्ज वाशिंगटन को बिना शर्त आर्थिक व सैनिक सहायता प्रदान की थी।फ्रांस के द्वारा दी गई सहायता के कारण फ्रांस को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा था। इसके अतिरिक्त अमरकीय स्वतंत्रता संग्राम में विजयी हो कर लौटे सैनिक उत्साह से भरे हुए थे।फ्रांस की जनता को उनके प्राकृतिक अधिकार दिलाने के लिए उत्सुक थे। वे अवसर की प्रतीक्षा में थे।इसीलिए फ्रांसिसी क्रांति के दौरान सैनिकों ने कई अवसरों पर जनता का साथ दिया।

दार्शनिकों की भूमिका (Role of Philosophers)

यूरोप में, अठारहवीं सदी की प्रमुख विशेषता बौद्धिक क्रांति का होना था। फ्रांस में भी ऐसे विद्वान् हुए जिन्होंने अपनी लेखनी से फ्रांसीसियों की सोयी हुई आत्मा को जगा दिया। ये प्रमुख विद्वान् – दिदरो (Diderot)

मंटेस्कयू(montesquieu), वाल्टेयर(Voltaire), रूसो(Rousseaue) , हेलवेटियस(Helvetios), होलब्रेक(Holbach) इत्यादि। यहां हम चार प्रमुख विद्वानों का पर प्रकाश डालेगें।–

दिदरो (Diderot 1713-1784)

दिदरो का जन्म1713 को फ्रांस में हुआ था।उसने विश्वकोश(Encyclopaedia) की रचना की थी। इसके 17 खंड थे।इसे1751-1772तक प्रकाशित किया गया था। इसमें विभिन्न प्रसिद्ध विद्वानों की रचना प्रकाशित की गईं थीं। इसमें दिदरो, कवेस्ने और वाल्टेयर जैसे विद्वानों की रचना प्रकाशित की गईं थीं। फ्रांस की रूढ़िवादी सरकार ने नाराज हो कर दि दरो को कारागार में डाल दिया। उसने कभी हार न मानी।

मंतेस्कयू (Montesquieu 1689-1755)

मंटेस्कयु का जन्म 18 जनवरी 1689को फ्रांस के बोर्डो नगर के समीप ला ब्रेड नामक गांव में हुआ था। उसके बचपन का नाम चार्ल्स लुई डी सेकेण्ड था।उसने बोर्डो विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी।1721 में वह वकील बन गया।1716में उसने अपना नाम मंटेस्कियू रख लिया। उसने12 वर्ष तक बोर्डो में प्रधान न्यायाधीश के पद पर कार्य किया उसने अपना अधिकांश समय लेखन में व्यतीत किया।

1728 में उसने अनेक देशों की यात्रा की। वह इंग्लैंड से बहुत प्रभावित था।उसने अनेक पुस्तकों की रचना की। प्रथम रचना1721 में द पर्शियन लेटर प्रकाशित हुई। उसके बाद उसने अनेक पुस्तकों की रचना की।

- रोमन लोगोंकी महानता और पतन के कारणों पर विचार (Reflection on the causes of the **Greatness and decline of Romans)1734.**

- सुल्ला और एकरेटिज सवांद(Dialogue of Sulla and Ecrates) 1745.

- कानून की आत्मा (The spirit of law) 1748.

कानून की आत्मा पुस्तक के दो वर्षों में 22 संस्करण छपे।

कानून की आत्मा नामक पुस्तक में मंतेस्क्यू ने सात शासन प्रणालियों की विस्तार से वर्णन किया है। राजा के देवी अधिकारों (Divine right of the king) की आलोचना की है।उसने सर्वप्रथम शक्ति पृथ्करण के सिद्धांत(Theory of separation of powers) का प्रतिपादन किया है।

मोंतेस्कयू को 18 वीं सदी का प्रमुख राजनीति चिन्तक माना जाता है।

वाल्टेयर (Voltaire1691-1778)

वाल्टेयर का जन्म फ्रांस के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उसके पिता उसे वकील बनाना चाहते थे लेकिन उसकी रुचि साहित्य में थी। उसमें आलोचना करने की अदभूत क्षमता थी। आलोचना के कारण उसे कई बार कारागार जाना पड़ा।अनेक वर्षों तक फ्रांस से बाहर रहना पड़ा।उसे फ्रांसीसी समाज में व्याप्त अराजकता का गहन जानकारी थी,उसकी उसने कटु आलोचना की।रोज ने लिखा है- वह फ्रांसीसी विचारों का पूर्ण दर्पण था। (He was the completest mirror of the French thought) अत्याचार का विरोध करने के कारण उसका चर्च से संघर्ष हुआ।वह चर्च को बदनाम स्थान कहता था। हेज न ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि लोगों ने राजा वाल्टेयर

का नाम दे रक्खा है संसार में उससे अधिक स्वतंत्र,निर्भीक व साहसी आत्माएं बहुत कम हुई हैं।

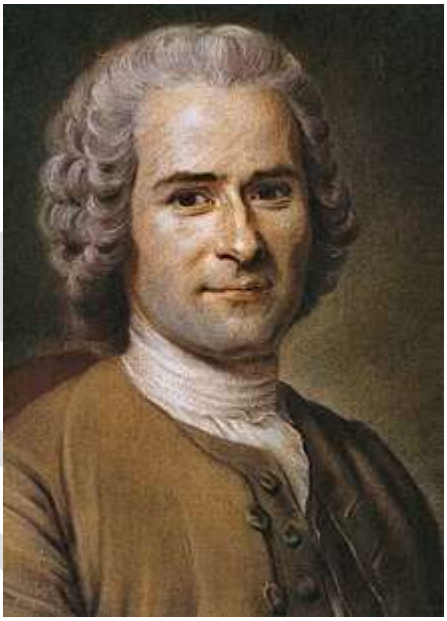

जीन जैकस रुसो (Jean Jacques Rousseau 1712-1778)

रूसो 18 वीं सदी का प्रमुख राजनितिक चिन्तक था।उसका जन्म 28 जू न 1712 में जनेवा में हुआ था।16 वर्ष की अवस्था में जेनेवा छोड़ दिया था।14वर्ष तक उसने यायवरी जीवन व्यतीत किया। इन्ही दिनों वह दिद रो जैसे लेखक के संपर्क में आया और फ्रांस की निर्धन जनता को देखने का अवसर मिला। एक लेखक के रूप में रुसो का जीवन 1749में प्रारम्भ हुआ। इसी वर्ष डिजोन की अकादमी(Academy of Dijon) द्वारा विज्ञान तथा कलाओं की प्रगति ने नैतिकता को पवित्र किया है अथवा भ्रष्ट ,नामक विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में रुसो

को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। रूसो को एक लेखक के रूप में प्रसिद्धी मिली।इसके बाद रूसो ने अनेक पुस्तकों की रचना की-

न्यू हैलो इज (New Heloise)-1761

सामाजिक समझौता(Social Contact)-1761.

एमाइल (Emile)1761.

द कनफैशंस (The Confessions)

द डाईलॉग्स (The Dialogues)

2 जुलाई,1778 को रुसो की मृत्यु हो गई।

सामाजिक समझौता नामक पुस्तक विशेष रूप से प्रसिद्ध हुई। इस रचना का पहला वाक्य – मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है, किंतु सर्वत्र जंजीरों से जकड़ा हुआ है।(Man is born free and every where he is in chains.) इस विचार के आधार पर ही रुसो ने एक आदर्श राज्य की रूपरेखा प्रस्तुत की। रुसो के विचारों ने जनसाधारण को असाधारण रूप से प्रभावित किया।रूसो को क्रान्ति का मसीहा (Prophet of the revolution) कहा गया।

इस प्रकार अठारहवीं सदी में फ्रांस के लेखकों ने नवीन राजनीतिक सिद्धांतों की स्थापना की।फ्रांस को राजनीतिक और सामाजिक क्रांति के कगार पर ला खड़ा किया। फ्रांसिस जनता को स्वतन्त्रता, समानता और भ्रा तृत्व का पाठ पढ़ाया।

Lecture on French Revolution to be continue …

Dr. Nijma